फिपोली

(पोवारी बालकविता संग्रह)

GOVARDHAN BISEN BOOK PUBLISHER

संपादक
गुलाब बिसेन

फिपोली

(पोवारी बालकविता संग्रह)

संपादक

गुलाब बिसेन

फिपोली (पोवारी बालकविता संग्रह)

Fipoli (Collection of Powari Children's Poem)

संपादक:
गुलाब बिसेन
फोन: +९१ ९४०४२३५१९१

प्रकाशक :
इंजी. गोवर्धन बिसेन,
गायत्रीकुंज, गजानन कॉलोनी, कुडवा, गोंदिया – ४४१६१४
ई-मेल: gayatrikunjgnd@gmail.com
फोन: +९१ ९४२२८३२९४१

मुद्रण:
श्री हरीश जोगळेकर,
वेदिका ग्राफिक्स, शॉप क्र. १४४ विंग क्र. ४ रजत संकुल,
गणेशपेठ, नागपूर – ४४००१८
फोन: +९१ ९७३००३४०३०

मुखपृष्ठ:
श्री ऋषी बिसेन, IRS
फोन: +९१ ८२७५०२१०६७

मुद्रित शोधन :
इंजी. गोवर्धन बिसेन,
फोन: +९१ ९४२२८३२९४१

प्रथमावृत्ती : ०३ मार्च २०२३

मुल्य : ₹१००/-

प्रति - १००

ISBN – 978-93-5779-922-5

-: अर्पण-पत्रिका :-

मोरो द्वारा संपादित **'फिपोली'**
येव पोवारी बालकविता संग्रह
मोरो आई बाबुजी ला
सादर अर्पण करूसु.

संपादक को परिचय

नाव - : गुलाब रमेश बिसेन
(आदर्श शिक्षक पुरस्कार प्राप्त शिक्षक / पुरस्कार प्राप्त लेखक)

पत्ता - : मु. सितेपार, पो. नवेझरी, ता. तिरोडा, जि. गोंदिया 441911

मो. नं. - : ९४०४२३५१९१

शिक्षण - : D. Ed. B. Ed. M. A. (Marathi) , DSM.

पुरस्कार -

१. उपक्रमशिल शिक्षक पुरस्कार २०१२ (राजर्षी शाहु शिक्षक पतसंस्था कोडोली, ता. पन्हाळा, जि. कोल्हापूर)
२. राज्यस्तरीय आदर्श शिक्षक पुरस्कार २०१६ (हिरवे गुरूजी प्रतिष्ठान, पैजारवाडी, ता. पन्हाळा, जि. कोल्हापूर)
३. आदर्श शिक्षक पुरस्कार २०१९ (अ. भा. शिक्षक साहित्य कला क्रीडा मंच, कोल्हापूर)
४. उपक्रमशिल शिक्षक सन्मान २०२१ (शैक्षणिक व्यासपीठ मलकापूर, ता. शाहुवाडी, जि. कोल्हापूर)
५. कथा लेखन राज्यस्तरीय प्रथम पुरस्कार २०२१ ("बाबांची सायकल" कथा - समाजभान समुह कोल्हापूर)
६. कथा लेखन पुरस्कार २०२२ (शिवम शैक्षणिक सामाजिक प्रतिष्ठान, राशिवडे, ता. राधानगरी, जि. कोल्हापूर)
७. साहित्यरत्न पुरस्कार २०२२ (बारावे ग्रामिण साहित्य संमेलन पट्टणकोडोली, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापूर)
८. राज्यस्तरीय साहित्य गौरव पुरस्कार २०२३ ("सृजनशाळा" पुस्तक - ॲक्टिव टिचर महाराष्ट्र ATM)
९. उत्कृष्ट बालवाडमय निर्मिती पुरस्कार २०२३ (खोपळीमाकी दिवारी" पोवारी बालकथा संग्रह - बालकुमार साहित्य सभा कोल्हापूर)

लेखन -

१. विविध वर्तमानपत्र, वेब पोर्टल अना मासिकमालक शैक्षणिक तसोच सामाजिक विषयपर नियमित लेखन.
२. किशोर, मुलांचे मासिक, ऋग्वेद, बालरंग, मराठी बालकुमार दिवाळी इत्यादी बालमासिक मालक बालकथा लेखन.
३. दै. सकाळ, दै. सामनामा बालकथा प्रकाशित. स्नोवेल, अटक मटक येन् आनलाईन माध्यममा कथा प्रकाशित.

प्रकाशित साहित्य -

१. सृजनशाळा (सहशालेय उपक्रम)
   ॲक्टिव टिचर्स सामाजिक प्रतिष्ठान संचलित कृतिशील शिक्षक महाराष्ट्र साहित्य गौरव पुरस्कार 2023
२. खोपळीमाकी दिवारी (पोवारी बालकथा संग्रह)
   बालकुमार साहित्य सभा कोल्हापुर उत्कृष्ट बालवाडमय पुरस्कार २०११
३. फिपोली (पोवारी बाल कविता संग्रह - संपादित)

इतर कार्य -

१. संपादक - *"झुंझुरका"* पोवारी बाल इ-मासिक
२. सह संपादक - पोवार इतिहास, साहित्य अना उत्कर्ष दिवाळी अंक, रंगोत्सव अंक
३. संपादक मंडळ सदस्य - मासिक ज्ञानयात्री
४. राष्ट्रिय कार्यकारणी सदस्य - अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ
५. सचिव - अखिल भारतीय शिक्षक साहित्य कला - क्रीडा मंच, कोल्हापूर

---ooo---

संपादकका बोल.....

पोवारी आमरी मायबोली शहदवानी मधूर से. येको गोड़वा पिढ़ीनपिढ़ी चाख रही से. घर - देहात, खेत - शिवार, शहर रवो या गाव पोवारी आपलो मधूरतालक माणूसला माणूससंगमा जोड़न को काम करंसे. पोवारी बोली की या मधूरता बालसाहित्य को माध्यमलक प्रवाहित ठेवनसाती मुहून "झुंझुरका" येनं पोवारी बाल इ-मासिक की सुरूवात करनो मा आयी. झुंझुरका मासिक को माध्यमलक पोवारी बालकविता, बालकथा, चित्रकथा, अनुवादीत साहित्य, कोडा इत्यादी अलग अलग दर्जेदार बालसाहित्य पोवारी मा प्रकाशित करनो मा आय रही से. झुंझुरका को काम अविरत सुरू से.

येनच झुंझुरका मासिक मा प्रकाशित बालकविता मा लका निवडक कविता को "फिपोली" येव सामायिक बालकविता संग्रह संपादित करन को घनी मोला बहुत खुशी होय रही से. येनं सफर मा झुंझुरका का उपसंपादक महेंद्र रहांगडाले, रणदीप बिसने, महेंद्रकुमार पटले अना उमेंद्र बिसेन इनकी मोला साथ मिली. येनं किताबरूपी फिपोली ला किताबको रूप देनोमा पोवारी बालसाहित्यिक श्री ऋषीजी बिसेन (IRS), डॉ. प्रल्हाद हरीणखेडे 'प्रहरी', इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल', सौ. वंदना कटरे 'राम-कमल', सौ. छाया सुरेंद्र पारधी, उमेंद्र युवराज बिसेन 'प्रेरीत', महेंद्र रहांगडाले, सौ.वर्षा पटले / रहांगडाले, सौ. शारदा चौधरी, महेंद्रकुमार पटले 'ऋतुराज', चिरंजीव बिसेन, शेषराव येळेकर, डी.पी. रहांगडाले, रणदीप बिसने, हेमंत पी. पटले इनकी बहुमूल्य अशी साथ मिली. इनको बिना येव काम अशक्य होतो.

येनं संग्रहसाती ऋषीजी बिसेन इननं सुंदर असो मुखपृष्ठ बनाय देईन अना इंजी. गोवर्धनजी बिसेन "गोकुल" इननं येनं किताबला 'ISBN' अर्थात 'इन्टरनेशनल स्टेन्डर्ड बुक नंबर' मिलायस्यान प्रकाशित करशान मोरो उत्साह बढ़ाईन येकोसाती मी उनकी आभारी सेव.

- संपादक

प्रकाशक का दुय शब्द....

इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'
पोवारी साहित्यिक अना प्रकाशक

गुलाबभाऊ बिसेन इनकी पुरो महाराष्ट्रमा सृजनशिल गुरुजी मुहून ओरख से. वय नहान टुरुपोटूइनलाई आपलो इस्कुलमा परिसर अभ्यास अना नवो नवो प्रयोगको माध्यमलका बालमनपर छाप पाड़सेती. गुलाबभाऊ बिसेन गुरुजी मराठी अना पोवारीमा नहान टुरुपोटूइनला चांगला संस्कार देनलाई बालकथाको लिखान करसेती. उनको उद्देश एकच रव्हसे, टुरुपोटूइनला बाचनकी गोड़ी लगे पायजे. येनच कळी मा उन्न रणदीप बिसने, महेंद्र पटले 'ऋतूराज', उमेंद्र बिसेन अना महेंद्र राहांगडाले इनला धरस्यान एक संपादक मंडळ तयार करस्यान नहान टुरूपोटूइनसाती *'झुंझुरका'* येव पोवारी बोली मा को इ-बालमासिक की सुरूवात जून २०२१ पासून सुरूवात करीन.

येनच 'झुंझुरका' बालमासिक मा की निवडक कविता को संग्रह मंजे *'फिपोली'* पोवारी बालकविता संग्रह आय. येनं 'फिपोली' संग्रहमा नहान टुरुपोटूइनला बाचनकी गोड़ीको संग संग बालमनपर संस्कार देनको प्रयत्न प्रस्तुत कविता संग्रह मा लिखनेवाला बाल साहित्यिक इननं पोवारी बालकविता को माध्यमलका करीसेन. येनं *'फिपोली'* पोवारी बालकविता संग्रह को *आय.एस.बी.एन.* पासून पुस्तक को प्रकाशन वरी की जवाबदारी गुलाबभाऊनं मोला देयस्यान पोवारी बोली को उत्थान अना संवर्धन करनलाई सेवा को मौका देयीन येकोलाई मी इनको सदैव आभारी रहून.

येनं 'फिपोली' पोवारी बालकविता संग्रहलाई संपादक गुलाबभाऊ बिसेन गुरुजी इनला मोरोकनलका बहुत बहुत हार्दिक अभिनंदन करूसु अना भविष्यमा टुरुपोटूइनला संस्कारित करनलाई असाच साहित्य प्रकाशित करनलाई अग्रीम शुभेच्छा देसु.

- प्रकाशक

ऋणनिर्देश

१. श्री. कुवरलाल मोहनलालजी रहांगडाले, सितेपार
(हवालदार, इंडियन आर्मी)

२. श्री. नितीनकुमार अशोक बिसेन, सितेपार
(अभियंता सहाय्यक, पं. स. आमगाव, जि. गोंदिया)

३. श्री. अनमोल माणिक रहांगडाले, सितेपार
(नायक - नर्सिंग सहाय्यक, इंडियन आर्मी)

४. श्री. अविनाश रमेशजी पटले, सितेपार
(लान्स नायक, इंडियन आर्मी)

५. श्री. विजय यशवंतरावजी रहांगडाले, सितेपार
(पी.व्ही.आर. टेक्नो सेल्स अ◌ॅंड सर्विस, नागपूर)

६. श्री.सुभाष दयारामजी कटरे, सितेपार
(कनिष्ठ लिपिक, बाघ सिंचन विभाग गोंदिया, जि. गोंदिया)

को विशेष आभार

अनुक्रमणिका

१. बालमन

- श्री ऋषि बिसेन, IRS

बालक को हिरदय
पावन मन मा परलय ॥
सपन की से दुनिया
खोयी गई से मुनिया ॥१॥

मोबाईल मा से मन
गेम मा से उलझन ॥
कोडिंग भयी से शास्त्र
तकनीक से ब्रह्मास्त्र ॥२॥

फाफा फ़ीफ़ली का खेल
ऑनलाइन मा मेल ॥
मिट्ठू को हिवरो रंग
देख मन भयो दंग ॥३॥

अंग्रेजी मा से पढ़ाई
नंबर की से लड़ाई ॥
खेलकूद का इनाम
संगीत कक्षा का गान ॥४॥

रिमोट की मोठी कार
मिलन को से आसार ॥
सॉफ्टवेयर मोबाइल
भयीसे गाड़ो को खेल ॥५॥

जन्मदिवस का केक
भेंट येक लक़ येक ॥
संगी इनको अंतर्नाद
मोठो इनको आशीर्वाद ॥६॥

करो आर्ट अना क्राफ्ट
बनावन का से ड्राफ्ट ॥
दिवस भर से शाला
घरमा लगी से ताला ॥७॥

श्याम ला से ट्यूशन
गृहकार्य को से टेंशन ॥
आय गयी से दीवारी
कसी होये तय्यारी ॥८॥

मोठो टाइम टेबल
देवा सबला दे बल ॥
माय अजी का सपन
कितं गयेव बालपन ॥९॥
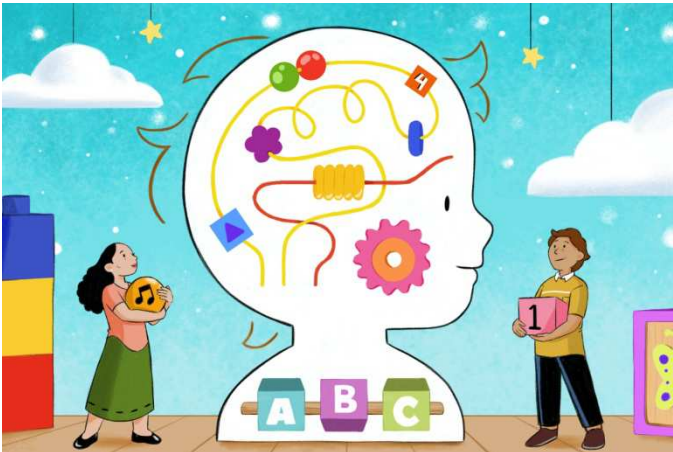
२. राजकुमार

- श्री ऋषि बिसेन, IRS

काय लाई रूठ गयो,
मोरो यव राजकुमार।
जरासो मुस्कराय दे,
करबीन तोला दुलार।।

कोयर की कुहू कुहू,
सुनकन हासी आई।
मोरो राजकुवार को,
मन ला लगित भाई।।

बंदरा कूद रही सेती,
कररही सेत हूप हूप।
देखकन ख़ुशी भई,
निखरयो वोको रूप।।

सुन चिड़िया की चहक,
मन मा आनंद आयो।
पक्षी जसो उड़न लाई,
मन ओको ललचायो।।

नहान सो मन मा,
सेती मोठा सपन।
कसो रस्ता रोके,
दुफारी की तपन।।

प्रकृति को कोरा मा,
सेती ख़ुशी का उपहार।
खुश भयो राजकुमार,
पायकन मोठो दुलार।।

३. नहानसो कास्तकार मी

- डॉ. प्रल्हाद हरीणखेडे 'प्रहरी'

नहानसो कास्तकार मी
इस्कुल आय मोरो खेत
शब्द अना संस्कारका
यहां मोती पिकं सेत ॥१॥

पाटी पुस्तक बांधी मोरी
फळा बंधारा तलाव
गुरू नदीलं पानी आयके
होसे वोकोमा जमाव ॥२॥

दुय उंगली बैलकी जोड़ी
जुपू कलमको हलला
कलम पेनकी शाईको रंग
रंगित करे चिखलला ॥३॥

अक्षरका बीज पेरके लेऊं
फसल ज्ञान संस्कारकी
चढू विवेकका पंख लगायके
हरेक चोटी संसारकी ॥४॥

अलग अलग बांधीमा बीज भी
बोऊं अलग विषयका
मिटे अंधविश्वास, कटेती
जाला सब संशयका ॥५॥

उनारोकी रब्बी फसलमा
मामाको गावला जाऊं
खेलकूद मस्ती आंबारस
मांडो रोटी खाऊं ॥६॥

सप्पा नन्हा किसान मिलके
खेती करबी संगमा
फसल कटेवपर खेलबी दिवारी
अना होरी एक रंगमा ॥७॥

४. फिपोली

- डॉ. प्रल्हाद हरीणखेडे 'प्रहरी'

रंगीबिरंगी फिपोली से
नट्टा पट्टा मखमली से
फुल सरिखी कोमल कोमल
पंखलका चमकिली से ॥१॥

सोर्ग की या अप्सरा
इतरा से कर नखरा
आंग भी कोमल नरम नरम
जसी बोर मा की इल्ली से ॥२॥

रूपमा अजिंठाकी लेनी
डोस्कीपर दूय बेनी
इठलासे मस्तीमा डुबी
सुंदर छैल छबिली से ॥३॥

झाळ फुल पर सदा बसं
मिठो मिठो रस चुसं
लाड़ चुंबन लेय लेव असी
नन्ही सी छकुली से ॥४॥

डोरा चंचल सितारा
पंखइनको पसारा
जहां जाये वहां धाऊ मंघं मंघं
जादूगरनी हठीली से ॥५॥

बादरमा उड़ जासे
हिरदामा भीड़ जासे
धरनला जासू हात नही आआवं
सुंदर या मतवाली से ॥६॥

हमेशा उड़ान लगावं से
कोनको मंघं या धावं से?
पान फुल पर कबं बस जाये
जसी नटखट नार नवेली से ॥७॥

हर दिल येको दिवाना
दिवो की या परवाना
इद्रधनुष सी फिपोली देखके
दुनिया सारी भुली से ॥८॥

हवामा गोता लगावं से
हरीयाली येला भावं से
नहान मोठा सबकी पसंद या
रंगीबिरंगी तितली से ॥९॥

५. भरी जत्रा जंगलमा

- इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'

भरी जत्रा जंगलमा
जमा भया सब जीव।
सिंहजीको अध्यक्षमा
बनी योजना आखीव ॥१॥

बन्या दुकान जत्रामा
लगायके मोठा तंबू।
हरीणको हातखाल्या
पानी पिवनला चंबू ॥२॥

हत्ती आपलो तंबूमा
एक खोलसे हॉटेल।
बड़ा सुवारी संगमा
बिकं पोवारी ऑटेल ॥३॥

भालू समोसा कचोरी
तरं ठेयके तेलुता।
मिठ्ठू आवं लेनसाती
पह्यनके मोठो जुता ॥४॥

रंग रंगको फुगाकी
सजी ससाकी दुकान।
मंगं लगती लेनला
पिल्लू प्राणीका नहान ॥५॥

वहां चालाक कोल्या बी
बिकं दुकानमा चना।
चित्ता फिरावं जत्रामा
मोठो आकाश पारना ॥६॥

करं बंदर तमाशा
बंदरीला धरकर।
पिल्लू देखत प्राणीका
पाठपर चढ़कर ॥७॥

बाघ खोलसे सर्कस
टुरू पोटूला धरके।
देख रहीसे जिराफ
वऱ्या मानला करके ॥८॥

रेकार्डिंग डाँस होतो
एक तंबूमा मोरको।
जंगलको प्राणीसाती
चलं संगीत जोरको ॥९॥

६. झम झम या बरसात

- इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'

बादर गरज्या धड़ाम धड़ाम।
बिजली कड़की कड़ाम कड़ाम ॥१॥

निकल्या मोर देख बादर कारा।
नाचके मंग फैलाईन पिसारा ॥२॥

बरसी झम झम या बरसात।
खेलन पानीमा मिली से सौगात ॥३॥

चलावो नाली मा कागद को डोंगा।
बजावो झुक झुक गाड़ीको पोंगा ॥४॥

भेपका बोंबलं डराव डराव।
झुलीर संगमा गानाको सराव ॥५॥

भयेव पानीलका रस्ता सपाट।
देखसे माय घरं तुमरी बाट ॥६॥

खेलनो भयेव आता मनमानी।
सपाई घरं जावो स्यायनोवानी ॥७॥

७. पक्षी की कमाल

- सौ. वंदना कटरे/ बिसेन 'राम-कमल'

एक गन जंगलमा
पक्षी नं करीन कमाल
इत उत उडाइन
धमालच धमाल ॥१॥

कारो कारो कावरानं
सुरू करीस गावनो
कोयार को तानला
भूल गयेव सायनो ॥२॥

पाणीपरा पाणकोंबडी
चलन लगी चाल
वारासंग आपला
उडावत होती बाल ॥३॥

आया सिमना सिमनी
तरा को पानी पिवन
पाणीला उडायके
आंग धोवत दुही जन ॥४॥

हिवरो हिवरो मिठ्ठू
कवन लगेव मंत्र
मोर मोरनीला सिकावं
नाचनको तंत्र ॥५॥

पांढरो पांढरो बगला
करं ढोंगी को ध्यान
मसरी देख पकडं
पटकन वोकी मान ॥६॥

सब पक्षी मगन
आपलोच तालमा
शेरको डरकारी लक
आया सप्पा भानमा ॥७॥

८. बिलाई

- सौ. वंदना कटरे/ बिसेन 'राम-कमल'

आमरं घर की बिलाई
करसे म्याव ss म्याव ss
चिडीचूप बसकन
साधसे शिकारी डाव ॥१॥

रंग येको कारोकुच
डोरा सेती घारा घारा
मुलायम पायलका
चलं से तरातरा ॥२॥

डोरा लगायके करं
प्राणायाम, ध्यान
जरासीबी आहटपर
टवकारसे दुही कान ॥३॥

आमरो बिलाई सामने
उंदीर होसेत भोला
चोरीलक खायलेसे
लोणी को गोला ॥४॥

दुध, बिस्कुट, रोटी तरी
इजगुरपरा लेसे धाव
पाखरूपर ठेवं डोरा
बढ जासे येका भाव ॥५॥

कोणीलाच नही भीवं
शेर की या मावसी
हरदिन रवसे येकी
महिना भर एकादसी ॥६॥

"सिकार" करनको येको
मोठो आवडीको छंद
पाय जवर खेलं तब
भेटसे मोठो आनंद ॥७॥

९. मोरी शाळा

- सौ. छाया सुरेंद्र पारधी

सुंदर साजरी शाळा मोरी
सबदून लगसे मोला प्यारी ॥
सबजन शाळामा जाबीन
ए बी सी डी शिकबिन ॥१॥

शाळा की भिती मोठी रंगीत
सुंदर चित्र ना बजसे संगीत ॥
राष्ट्र गान सब गावबिन
ए बी सी डी शिकबिन ॥२॥

शाळा मा से सुंदर बगीचा
रंग रंगका फुल सेतं बिछ्या ॥
फुल सरिखा सुगंधित होबीन
ए बी सी डी शिकबिन ॥३॥

मैदान मा खेलसेजन कबड्डी
अजवरी नहीं तुटी कोनीकी हड्डी ॥
संगठन को महत्व जानबिन
ए बी सी डी शिकबिन ॥४॥

गणित की निकलसे सवारी
गुरुजी आमरा गुणी भारी ॥
पायथागोरस नियम बाचबीन
ए बी सी डी शिकबिन ॥५॥

कार्यक्रम की याहा रेलचेल
नाटक नृत्य संगीत को मेल ॥
सर्वांगीण विकास करबिंन
ए बी सी डी शिकबिन ॥६॥

सब गुन की खान या शाळा
लगसे जसो फुलईनको मळा ॥
शिककर सुशिक्षित सब होबिन
ए बी सी डी शिकबिन ॥७॥

१०. पानी आयेव झम झम झम

- सौ. छाया सुरेंद्र पारधी

बिजली चमकी चमचम चम
पाणी आयेव झम झम झम
देखो बाजा बजाइन ढगइंन
भेपका चल्या टम टम टम ॥१॥

चलो चिंकु, पिंकू अना रवीना
नावमा बसजो साजरी तू मीना
चले पानिमा सरसर सरपट
पराई पेट्रोल पाणी को बिना ॥२॥

पाणीमा देखो उठया बुडबुडा
भेपका मोठा मोठा टूरटूरा
आवाज करसेत डराव डराव
खाबिन कसेत वय कुरकुरा ॥३॥

असो पानीको मौसम ठंडो
आलू भुजबि चुलोको भूभूरमा
खाबी गरमा गरम सबजन
बने पेटमा ओको चूरमा ॥४॥

११. सिंह अना लांडग्या

- उमेंद्र युवराज बिसेन 'प्रेरीत'

एक जंगल मा फिरत होता
सिंह अना लांडग्या दुयजन
ओतरोमाच आयेव मेढीं को
आवाज दुयीनको कानकन ॥१॥

लांडग्या होतो बढाईखोर
सिंहला कसे महाराज बसो
चल चल कन तुम्ही थक्यात
आणुसू मी शिकार देखो कसो ॥२॥

मेंढी को दिशालका निकलेव
ओला दिस्या शिकारी कुत्रा चार
एक माणूस दंडा धरस्यान
देख कर भयेव वू फरार ॥३॥

कवन लगेव मंग सिंहला
तुम्हीच आव जंगलका राजा
वहां सेती सब दुबली मेंढी
दुसरो करबी शिकार ताजा ॥४॥

पर सिंह होतो हुशार ओनं
आवाज होतो कुत्राको
ओला समज आय गयेव
लबाडपणा लांडग्या लुत्राको ॥५॥

१२. रव्हता पंख कभी मोला......

- उमेंद्र युवराज बिसेन 'प्रेरीत'

रव्हता पंख कभी मोला
उची भरारी लेतो बादर मा।
सैर करन निकलतो मी
लुपाय जातो निळो चादर मा ॥१॥

रव्हता पंख कभी मोला
फिरेव रव्हतो घनो बन मा।
देखेव रव्हतो निसर्गको
सौंदर्य नदी-नाला क्षण मा ॥२॥

रव्हता पंख कभी मोला
भयो रव्हतो मनको राजा।
चलतो मी मनमर्जी लका
करतो बादर मा मजा ॥३॥

रव्हता पंख कभी मोला
रोक-टोक भी नहीं रव्हती।
सैर सपाटा रव्हतो मस्त
हर इच्छा मोरी पूरी होती ॥४॥

१३. पुस्तकच संगी

- महेंद्र रहांगडाले

एक किताब जवर
बाजूला सौ संगी
संगी देयेत दगा
किताब करे ढंगी ॥१॥

लिख-बाचकन
लोक उंचा उठाया
गरिबी लक वय
बाहेर आया ॥२॥

किताब देखावं से
दुनिया सारी
दिमाकला मिल् से
खुराक भारी ॥३॥

भलो- बुरो की
निकलसे आवाज
किताबवालो को
अलगच मिजाज ॥४॥

बाचो त् बचो
कवनो से खरो
मुहून 'किताब की
संगत तुमी धरो ॥५॥

धन की चोरी
करेती चोर
ज्ञान बढाओ
बनो सिरमोर ॥६॥

दुय रुपया रयेती
करो असो हिसाब
लेवो एक की रोटी,
दुसरो मा किताब ॥७॥
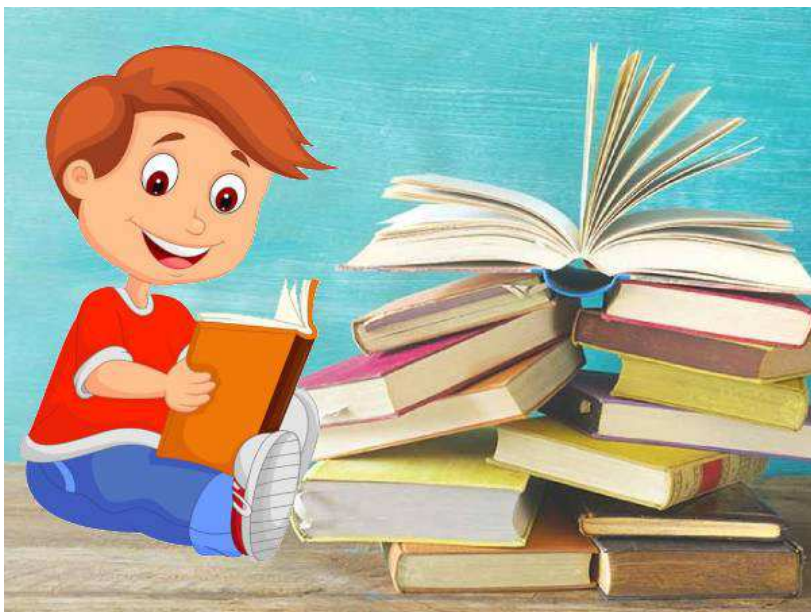
१४. देशी बोर

- महेंद्र रहांगडाले

खेतमा भरमार, देशी बोर
जोर ल खांदा हलावो भरभर,
कोनी मिठी, कोनी खाटी
कोणी नहान, कोनी डगर ॥१॥

हिवरी-लाल झाड ला लगडी
खांदा ओलंब्या ना खालत्या सडा
वारेव बोर को मुरंबा अना
बोर बुकनी का स्वादिष्ट बडा ॥२॥

आवरा बोर, खोबरा बोर,
दारू बोर नाव येका कईक,
झोरा धरके निकलं बालसेना
बोरं जमा करके होत बाटा ॥३॥

कलमी बोर को रेस मा
देशी बोर पडी मंगं,
जसो शहरी पुळो गयेव
गावठी रहेव गाव को संगं ॥४॥

१५. परीराणी

- सौ.वर्षा पटले/ रहांगडाले

परी राणी काल मोरो,
सपन मा आई
पंखपरा बसकन
वऱ्या मी उडाई ॥१॥

पंख परीका नाजूक,
होता बडा सुंदर
टुनकन ऊडी मार,
बसी वोको अंदर ॥२॥

आकाश की सैर कर,
मन प्रसन्न भयेव
पीपरमेंट गोली देख,
पानी जीभला सुटेव ॥३॥

सुंदर बगिचामा मोला,
परीनं उतराईस
मीठा मीठा फल ताजा,
खानला देईस ॥४॥

रंगरंगका होता फुल,
सुंदरसो झाडपर
डोरा फाळ देखत रही,
फूलकन घडीभर ॥५॥

ताजी हवा, ताजो पाणी,
नही वहां प्रदूषण
मोहक ना तेजमय,
निसग्र को दर्शन ॥६॥

मनभरेव तरी चीत,
काही दावत नोहोतो
परीलोक हिरदामा,
मोरो मावत नोहोतो ॥७॥

खेल खेली खुबसारा
परीराणी मोरो संग,
शांतीप्रिय, आनंदित,
पल होतो नवरंग ॥८॥

पाणी पळेव चेहरापर
जाग आयी मोला तब
आई कसे बेरा भयी,
इस्कुल जाजो तू कब ॥९॥

१६. चांदा मामा

- सौ.वर्षा पटले/ रहांगडाले

चांदा मामा टीकी दे
गोड गोड लाडू सप्पा दे
लहानसो सोनुलीला
सुंदर वालो पापा दे ॥१॥

मामा को वाडा आमरो
मोठो नाहाय से नहानो
घीव रोटी नही यहा
कळीकांजी को खानो ॥२॥

राती आंगन मा सोयेवपरा
शीतल, थंडी छाया दे
अजी अना माय ला मोरो
सुख समाधानी माया दे ॥३॥

पुनवा को उजारो मा
बुडगी की खाट दिसन दे
झुंझुरकाच मासीइंधारोमा
सुकीरको थाट दिसन दे ॥४॥

चांदा मामा चांदा मामा
निर्मल तोरी काया दे
तान्हो मोरो छकुल्याला
गोड आपली माया दे ॥५॥

१७. कावरा

- सौ. शारदा चौधरी

बोंबलन बसेव कावरा
सकार को समयी
माय कवन बसी
चल उठ बेरा भयी ॥१॥

आंगणमा आयके
काव काव करं सें
इतं उतं देखकर
डवका च मारं से ॥२॥

सुवट से चोच
दुय डोरा गोल
चलाख से मोठो
कर्कश वोको बोल ॥३॥

गाव ना डोमकावरा
असो भेद इनको
दुय पाय को पक्षी
लोभी से मनको ॥४॥

मानपर राखडी छटा
कारो रंग को भेष
आवंसेत पाहुणा
देयके जासे संदेश ॥५॥

१८ बाहुली मोरी

- सौ. शारदा चौधरी

बडी साजरी से
बाहुली मोरी
देखनला मस्त
सडपातळ गोरी ॥१॥

गुलाबी गाल
गोल चेहरा
सोनेरी लटं
निळसर डोरा ॥२॥

टाकंसे मखमली
झगा सुंदर
डोरा फिरावंसे
गरगर अंदर ॥३॥

लगं से परी
साज चढाये परा
देखावंसे हरघडी
भलतोच तोरा ॥४॥

रवंसे मोरो
संग हरदमं
बिगर येको
मोला नही गमं ॥५॥

१९. ढकना पारा

- शेषराव वासुदेव येळेकर

बिह्या की सहनाई
आयोव कुंभार घरको बान
काकन लेनला सब बसी
फुफाबाईला बाटनको मान
॥१॥

ढकना पारा धरकन
सबकी काकनलका ओटी भरं
कडक दाम पर फुफाबाई
आव आव काकन धरं
॥२॥

हिंमत नही होय
फुफाबाई को काकन महाग
दस्तूरका ढकना पारा
काकन लेनका जुड्या भाग
॥३॥

फुफाबाई दाम ना सोड्
नवरदेवकी माय रोवं
का करु ननद बाई
बिह्या को धांदलमा पिवशी नही चोवं
॥४॥

फुफाबाई को दिवस मोठो
इस्टेटक मोरो बाप की आय
जलदी दाम देवो भौजी
मी नहाय आता भोली गाय
॥५॥

मांडो सुताईस फुफ्याजीनं
फुफाबाई ढकना बेचं
फुफाबाई फुफ्याजी
सबला नचावत होता नाचं
॥६॥

२०. कुत्रा बिलाई

- शेषराव वासुदेव येळेकर

कुत्रा बिलाई
होता चांगला दोस्त
शामराव घरं
रवत होता मस्त ॥१॥

पुनवा की राती
सोयी नोहोती बिलाई
म्याऊ म्याऊ करत
जगावत होती सपाई ॥२॥

शामराव की झोप तुटी
बिलाईला देईस मार
रातभर कायला चिल्लाईस
करीस घरको बाहार ॥३॥

दुसरो दिवस आया चोर
कुत्रा नही भूकेव
बिलाईनं खाईस मार बापा
काल मी डोराभर देखेव ॥४॥

चोरी भयी घरमा
शामराव भयोव दुखी
भूकेस काये नही
मारन बसेव लात बुक्की ॥५॥

२१. चल जाबीन शाळा मा

- रणदीप बिसने

चल जाबीन शाळा मां
नोको करूस आलस।
शिक्षण जरूरी से बंडू
जीवन होये गा सालस॥१॥

गुरू सिकावसेती गुण
मजबूत बनन भविष्य।
झटक आळस मन को
सुंदर बनें ना आयुष्य॥२॥

शाळा मां बनसेती संगी
मन बनसे खुलो संपूर्ण ।
मन मां सुचसेती कल्पना
जीवन बनसे विस्तीर्ण॥३॥

भेटसे नवो ज्ञान विज्ञान
समृद्धी आवसे जीवन मा।
समस्या जो भी आयेती
उत्तर सहज सूचे मन मा॥४॥

अ ब क ड से सुरूवात
अक्षरज्ञान को से महिमा।
संस्कार शिक्षण का मोठा
उज्वल नाव होये सही मा॥५॥

माय बाप संग गुरूजी बी
जीवन संस्कार मां थोर।
शाळा मां जाये परा भेटेती
सब प्रश्नइनकं खरो उत्तर ॥६॥

२२. खेलबी सुआ को खेल

- रणदीप बिसने

आयी जोर की बारिश
गिली भई ना जमीन
पजाव लकडीला बाको
सुआ मस्त खेलबीन.... ॥१॥

रस्ता भया सिमेट का
माटी नही ना यंज्यान
चलो बांदी मां जाबी
खाली पडीसे खर्यान...... ॥२॥

भोवरा नही ना गिल्ली
नहीं जम् खेलन क्रिकेट
सुआ को खेल पियारो
फेको ना जसो राँकेट..... ॥३॥

बास,येन को होसे
सुआ मोठो मजबूत
गिरावसे सब सुआला
नहीं झटदिसी तूट........ ॥४॥

असो खेल मोरो प्यारो
गाव खेडामां को खेल
खेलबी मनमौजलक
सुआ को या खेल........ ॥५॥

२३. रिस्ता

- महेंद्रकुमार ईश्वरलाल पटले 'ऋतुराज'

अल्यान्याको फल्याना
फल्यान्याको ढेकान्या।
ये रिस्ता समजनला
बहू लोग चुकान्या ॥१॥

मावसीबाई, मामाजी
बहिनभाई मायका।
फुफाबाई, काकाजी
बहिनभाई अजीका ॥२॥

दादाजी, स्यायनीमाय
बाबुजीका बापमाय।
नानाजी, नानीजी
आईका बापमाय ॥३॥

मोवस्याजी, फुफ्याजी
मावसी, फुफूका घरवाला।
मामीजी, काकीजीको
मामा, काका लेसेत सला ॥४॥

मावसभाई, फुफाभाई
मावसी, फुफूका टुरा।
मामभाई, काकोभाई
मामा, काकाका टुरा ॥५॥

मामबहिन, मावसबहिन
मामा मावसीकी टुरी।
काकोबहिन, फुफबहिन
काका फुफाकी टुरी ॥६॥

२४. सिमनी

- महेंद्रकुमार ईश्वरलाल पटले 'ऋतुराज'

काल होती यहां बसी
अज काही चोवं नयी।
सांगना वो बडीबाई
वा सिमनी कहां गयी ॥१॥

वोकी चिवचिव बोली
होती मधुर साजरी।
काम कर गा खुदको
नही कोनीकी चाकरी ॥२॥

लहानसा पंख वोका
होती लहानसी चोच।
उडाय येतरो वरत्या
जहा पोहच् नही सोच ॥३॥

कागद 'ना कचराको
बनायी होतीस गोदा।
पिल्लांसाती रोजच
चारोपानी आनं जादा ॥४॥

जगावं सेजार बेठार
सखी सहेली संग।
मातीमा सपाज जाय
तांबूस भुरसट रंग ॥५॥

२५. मंडई

- चिरंजीव बिसेन 'सीपी'

मनपसंद की चीज देखनला।
मंडई मा गयेव होतो फिरनला ॥धृ॥

सिंगाडा खायेव, चना बी खायेव,
कुटकी का लाडू बी खायेव,
गपागप गुपचुप गटकनला
मंडई मा गयेव होतो फिरनला ॥१॥

फुगा लेयेव, बंदूक बी लेयेव,
लालवालो पट्टा बी लेयेव,
अगास पारणा मा झुलनला
मंडई मा गयेव होतो फिरनला ॥२॥

आस्वल देखेव,बंदर बी देखेव,
मोठो जात हत्ती बी देखेव,
सरप मुंगूस की लडाई देखनला
मंडई मा गयेव होतो फिरनला ॥३॥

नाच्या देखेव, पेंद्या बी देखेव,
टारा-टुरी की दंढार बी देखेव,
शाहिर को गाना आयकनला
मंडई मा गयेव होतो फिरनला ॥४॥

२६. जादुई जूता

- चिरंजीव बिसेन 'सीपी'

मोरो जूता से जादूई,
टाककर नाचू थुई थुई,
पहुंच जासू हर जागापर,
आकाश रव्ह या भुई ॥१॥

जूता टाककर फिता बांधकर
होय जासू मी रफू चक्कर,
भलो भलो पहलवान इनला
देसू मी एकटो टक्कर ॥२॥

जूता टाककर मी उडाय
जासू पलभरमा आकाशमा,
बादरपर बसकर सैर करूसु
कही बी अंधारो या प्रकाशमा ॥३॥

जूता टाककर कभी कभी
होय जासू मी पूरो गायब,
धूंड नही सकत मोला तब
पुलीसवाला ना मोठा साह्यब ॥४॥

जूता मोरा सेती जादू का
सबदून मस्त,चांगला,सुंदर,
कमाल अशी देखाऊसु मी
हार जाहे मोरल् जादूगर ॥५॥

२७. संगी

- डी.पी.राहांगडाले

रामू ना शामु दुहिकी मोठी होती दोस्ती ।
संगमाच खेलत होता करत होता मस्ती ॥१॥

बिट्टी ना दांडू या कवळी गोली को खेल ।
इतनउतन संगमाच जाती रव्ह खूप मेल ॥२॥

लुका छिपी खेलन बस्या सब संगीभाई ।
मग रामू पराचं गन देनकी पारी आयी ॥३॥

कोणी गया इतनउतन झाळमंग लुप्या ।
नही भेट्या रामूला त कसे कांहा छुप्या ॥४॥

गन काही सुट नही त जायशानी रुसेव ।
अलगजायशान बिचारो एकटोच बसेव ॥५॥

धावतच आया सब संगी, गन तोरी सूट ।
मिलकर खेलबिन नोको करो ताटातूट ॥६॥

कोणी कोणी संग नोको करो भेदभाव ।
एकमाच रव्हन बस्या सुखी भयव गाव ॥७॥

२८. ससा

- डी.पी.राहांगडाले

लाल लाल डोरा जेका,लंबा लंबा कान
भाऊ, घर एकठन ससा त आन //ध्रु//

आखुड,आखुड पाय ना लाहानसी पुष्टी
दुय पायपर उभो जसो सांगणं बसेव गोष्टी
इत उत टकमक देख,फिरावसे मान
भाऊ, घर एकठन ससा त आन //१//

पांढरा पांढरा केस ओका, कापूस च दिस
मुलाम मुलाम केस जसो गालीचाच भास
लालसर डोरा ओका, दिससेती छान
भाऊ, घर एकठन ससा त आन //२//

जंगल, झाळी झुळूपमा ओको बसेरा
धरणसाती फासा लग रस्तारस्ता परा
चारही आंग ससा को रव्हसे ध्यान
भाऊ, घर एकठन ससा त आन //३//

कोवरो कोवरो गवत, कुतुर कूतुर खासे
दूय पायपर उभो, टुकुर टूकुर देखसे
हरदम ससा रव्हसे बळो सावधान
भाऊ, घर एकठन ससा त आन //४//

केतरो सुंदर ,गुलुगुलू लाहानसो जीव
ओकमाभी आत्मा से जिव ना शिव
त्रास नोको देवो ओला करो गुणगान
भाऊ, घर एकठन ससा त आन //५//

२९. बंदर आया

- हेमंत पी पटले

बंदर आया बंदर आया।
झुंड झुंड लक बंदर आया ॥१॥

हुप हुप वय सब करन लग्या।
दात सपा किचकावन लग्या ॥२॥

लग्या पपई कोहरा तोड़न।
सपा उचल कुद लग्या करन ॥३॥

निडर कसा सब लग्या खेलन।
जाम चीच परा लग्या कुदन ॥४॥

बेला संग दोड़का झुणकी।
तोड़ फेकनो आदत उनकी ॥५॥

काच तोड़ सपा कवल चूरा।
बदमाश भया बंदरा पूरा ॥६॥

पयलो सरिखा नहात बंदर।
शिवार मा नही जात बंदर ॥६॥

कट्या झाड़ गया मुर जंगल।
गाव गाव बंदर को मंगल ॥७॥

३०. कावळा चिमणी

- हेमंत पी पटले

एक दिन कावळा चिमणी, घरपरा मोरो आया ।
खानला नही दानापाणी, येन कारण खूब रोया ।। ध्रु ।।

समज नही आव जरा, कांहा गयीसे दयामाया ।
जीव जंतू पलेती कसा, कोन देये इनला छाया ।
धर्म उपकार करोना, कसो जान देसे व वाया ।
गरीबी मा गिलो आटा, थोडी सी तरी करो दया ।।१।।

झाड झडुला बाळीपरका, कसा लग्या काटला ।
तोड इनको बसेराला, उजाड करीन बाळीला ।
तोड मातीका घर जुना, बांधन लग्या ये बंगला ।
फोटू मंगका गोदा घरटा, चली गया कसा वाया ।।२।।

अक्षदा देणं बीहया का, कुचराई लग्या करणला ।
चिमणी पाखरू का दाना, नही मिल रया खानला ।
मयत पर का लाई दाना , देती पोट भरन ला ।
भुकमरी की बळी संख्या, पशु पक्षी पर करो दया ।।३।।

३१. चाकलेट को बंगला

- डॉ. प्रल्हाद हरीणखेडे 'प्रहरी'

सीता कुंदा कमला सुनिता अना मंगला
आवो चलो बनावबीन चॉकलेटको बंगला ॥धृ॥

कॅडबरीकी छत छप्पर
किटकॅटकी दिवार
मंचका उभा मुंडा
लॅक्टोकिंगको द्वार
हर्सी सिरप शोभे फाटकको रंगला ॥१

कॉफ़ी बाईटकी खिडकी
पारले किसमीको छज्जा
कॅंडी बारकी पाटण
क्रंची शॉटकी मज्जा
सिल्क ओरियो लका सजावबी पलंगला ॥२॥

पिपरमेंटको पिंजरा
हिरवी कॅंडीको राघू
दुय मजली बांधनला
मी तासनतास जागू
पल्सकी मैना ठेऊ राघूको संगला ॥३॥

अल्पेनलिबे पोर्चमा
लॉलीपॉपको झुला
पॉपिन्सको बगिचा
ऑरेंज मॅंगो गुल्ला गुल्ला
चॉकलेटको केक जन्मदिनको प्रसंगला ॥४॥

३२. इल्ली

- डॉ. प्रल्हाद हरीणखेडे 'प्रहरी'

लोलू पोंजू ढिल्ली
पानपर की इल्ली
पानी मा पड़ी छपाक
भय गयी गिल्ली ॥१॥

कहीं कोल्या भेस
आंगभर केस
कहीं पानबिच्छू को
चढ़ जासे टेस ॥२॥

पान फूल डिरा
लौकी बाल खीरा
करे असो ठुटा जसो
चल गयेव ईरा ॥३॥

रंगनारंग का
अकार अंग का
तालमा उठावं पाय
पुढ़ो ना मंघं का ॥४॥

नवा नवा कोरा
मोठा मोठा डोरा
घीवपर झाकेव से
काच को कटोरा ॥५॥

झ्याक या सुंदरी
मारं से गुंढरी
चाळा येका देखता
लगं से तंदरी ॥६॥

खाय कुर्रमकूर
फुगं टुर्रमटूर
बन के फिपोली
उड़ गयी भुर्रमभूर ॥७॥

३३. सीखबीन अआइई

- इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'

रवि बबलू 'ना ताई, इस्कुलकी बेरा भयी।
चलो चलो इस्कुल मा, सीखबीन अआइई ॥धृ॥

झुंझुरका झुंझुरका, कोंबड़ाकी कुकूच कू।
आयी बीस्तरपराच, मोला कानमा आयकू ॥
कसे कोंबड़ा सबला, उठो उठो बेरा भयी।
चलो चलो इस्कुल मा, सीखबीन अआइई ॥१॥

टिकटिक ठोका देसे, घड़ी भीतपर टंगी।
कसे आंग धोयशान, तुमी करो केस कंगी ॥
नास्ता करो पिवो दुध, इस्कुलकी बेरा भयी।
चलो चलो इस्कुल मा, सीखबीन अआइई ॥२॥

जायशान इस्कुलमा, करबीन पाठ पाढ़ा।
पिवबीन वहां आमी, शिक्षणको कडु काढ़ा ॥
जासे रोज जेव वला, सरस्वती कृपा भयी।
चलो चलो इस्कुल मा, सीखबीन अआइई ॥३॥

३४. उंदरा

- इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'

ढोलामा भरेव होतो धान।
उंदरा मारसे कुदी वहान॥
बिलाई मावसी देखस्यान।
टवकारं उंदरा दुयी कान॥१॥

ढोलामा वोला दिससे साप।
परान को घनी लगं से धाप॥
इतन बिलाई से उतनी साप।
उंदरा कसे मरेव रे बाप॥२॥

हिंमत धरके बचाईस जान।
ढोला मालका परायस्यान॥
खिड़कीमालं मारसे उड़ान।
धरसे फांदीला लटकस्यान॥३॥

वोका वहानबी फुट्या भाग।
होतो चालू काव-काव राग॥
कावराकी चोच करसे आग।
उंदरा परासे भागंभाग॥४॥

३५. भाजीवालो

- सौ. वंदना कटरे/ बिसेन 'राम-कमल'

भाजीवालो ssभाजीवालो ss
इत तं आवजो भला
ताजो ताजो भाजीको
वान देखावजो आमला ॥१॥

गोल गोल आलू का
जाणूसु मी मोल
हर रोज खाऊन तं
पोट को जाये तोल ॥२॥

जामुनी, हीवरो बगन
सग्गा मी बनाऊन
भरीत संग रोटी को
ताल मी जमाऊन ॥३॥

पुलाव मा मिलाऊन
गोबी को पांढरो फुल
खायकन होय जाऊन
भाजी संगमा गुल ॥४॥

हीवरो हीवरो पालकको
ताजो ताजो सूप
भुरो भुरो कायाला
नही लगनकी धूप ॥५॥

अंबाडीको डोडा की
लाल लाल चटणी
कोणी नही आण सक
बबली ला वठणी ॥६॥

लाल लाल भेदराच
आणे भाजीला सवाद
गाजर अना मुरा की
नहाय कोनीला फरयाद ॥७॥
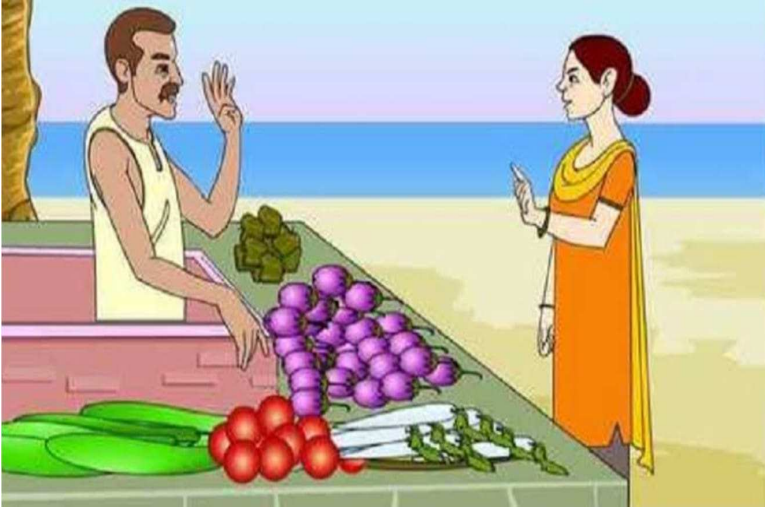
३६. वाघोबा

- सौ. वंदना कटरे/ बिसेन 'राम-कमल'

वाघोबा वाघोबा
तुमी सेव कसा?
रोज रोज खासेव
पांढरो पांढरो ससा ॥१॥

येतो मोठो जंगलमा
नहाती तुमला मित्र
खुसाली को कबीच
नही तुमला पत्र ॥२॥

पिवरो कारो पट्टाको
आंगपरा से साज
मनमौजी जीवन तोरो
चाल तोरी ऐटबाज ॥३॥

घारा घारा डोराकी
बिलाई तुमरी मावसी
तुमी खासेव प्राणी
वा रव्हं से उपासी ॥४॥

होसे तोरो आगमन
हिरणी बी सैरभईर
सजीव प्राणी को से
तोला केतरो बईर ॥५॥

मायला मांगकन आणू
तोरोलाई बोहुत करंजी
डकार आवतवरी खाजो
अंडा की वा भुरजी ॥६॥

डरकारी अगाजलका
परासेती जनावर सारा
पिरमलका कोण डाके
मंग तुमला ठंडो वारा ॥७॥

घरमा मोरो शायनोजी
करसेत तुमरी नक्कल
सर्कस को कामलाई
कसी उमजी अक्कल ॥८॥

३७. फूल रंगीबेरंगी

- उमेंद्र युवराज बिसेन 'प्रेरीत'

मोगरा को गंध पसरसे
परिसर सारो महकसे
रंग पांढरो सुंदर रूप
सुर्य प्रकाशमा लहरसे ॥१॥

सुंदर दिसं जाई को बेला
फुल नाजूक सुभ्र रव्हसे
फुलसे संध्याकाल को बेरा
धीरू धीरू सुगंध वू देसे ॥२॥

जुई वनस्पती उपयोगी
करं आयुर्वेदिक को काम
फुल लका बनसे अत्तर
बजारमा देसे अच्छों दाम ॥३॥

चाफा रव्हसे रंगीबेरंगी
नाव ओका सेतीच अनेक
सोन, कवठी, पांढरो, नाग,
पिवरो अना एक से एक ॥४॥

निशिगंधा को काम अलग
हार, बेनी सजावन लायी
देठ ओकी उपयोगी बढ़ी
पुष्पगुच्छ बनावन लायी ॥५॥

३८. भालू को किराणा दुकान

- उमेंद्र युवराज बिसेन 'प्रेरीत'

भालू लगावसे किराणा दुकान
ससा आयो लेनला खानको पान
चिमणी आयी कवनलगी भाऊ
काहे सोड्यात जंगलको दुकान ॥१॥

भालू कवन् लगेव चिमणीला
बाई गिऱ्हाईक नहीं जंगलमा
बिचमा बोलेव कावरा भालूला
चलसे का दुकान ऐन गावमा ॥२॥

जंगलदून बेस से यहा दुकान
नगदीलक जासे यहा सामान
जगलमा भयी होती जित उत
पैसां की जरासी उधारी बेभान ॥३॥

उधारीको बोझल् बंद भयेव
जंगलको मोरो किराणा दुकान
तुमरो सारखो गिऱ्हाईकलका
बढे मोरो दुकान की आता शान ॥४॥

३९. आई मोला...

- महेंद्र रहांगडाले

आई मोला खेलन दे ना
माती मा लोळण दे ना
पसीना लक ओलो होयके
मनमौजी मोला बनन दे ना ॥१॥

लिख लिख के मान दुखी
कार्टून देखके डोरा दुख्या
हिरवो गार निसर्ग संग
मस्तक थंडो करन दे ना ॥२॥

घर की गादी छोड के
जमीन पर पडन दे ना
इस्त्री को कपडा इंकी
घडी मोडन दे ना ॥३॥

बरसात को पाणी मा
मोला भिजन दे ना
चिखल का फव्वारा
चेहरा उदरन दे ना ॥४॥

आई मोला बाहेर
की दुनिया देखण दे ना
थांबाऊ नोको पंछी सारखो
आकाश मा उडन दे ना ॥५॥

४०. अगाज

- *महेंद्र रहांगडाले*

सेरी करं से म्यांऽ म्यांऽ
बिलाई करं से म्यांव म्यांव
अडो करं से भूऽ -भूऽ
दुयीमा कोण चोर कोण साव

बाघ करं से गर्जना
कोल्ह्या की कुइं कुइं
सिमनी की चिव चिव
फिफोली देख हासं से जाई-जुई

गधा करं से हॉ- हे हॉ
गाय करं से हंबा-हंबा
कावरा की काव काव
जिराफका पाय लंबा-लंबा

सरप करं से फुंस-फुंस
भेपका करं से डराव-डराव
कोयार को स्वर कुहु-कुहु
बिबट्या देखके पराव- पराव

४१. मोरी शाळा

- सौ. छाया सुरेंद्र पारधी

सुंदर साजरी शाळा मोरी
सबदून लगसे मोला प्यारी
सबजन शाळामा जाबीन
ए बी सी डी शिकबिन ....॥१॥

शाळा की भिती मोठी रंगीत
सुंदर चित्र ना बजसे संगीत
राष्ट्र गान सब गावबिन
ए बी सी डी शिकबिन .....॥२॥

शाळा मा से सुंदर बगीचा
रंग रंगका फुल सेतं बिछ्या
फुल सरिखा सुगंधित होबीन
ए बी सी डी शिकबिन.....॥३॥

मैदान मा खेलसेजन कबड्डी
अजवरी नहीं तुटी कोनीकी हड्डी
संगठन को महत्व जानबिन
ए बी सी डी शिकबिन......॥४॥

गणित की निकलसे सवारी
गुरुजी आमरा गुणी भारी
पायथागोरस नियम बाचबीन
ए बी सी डी शिकबिन .....॥५॥

कार्यक्रम की याहा रेलचेल
नाटक नृत्य संगीत को मेल
सर्वांगीण विकास करबिंन
ए बी सी डी शिकबिन ......॥६॥

सब गुन की खान या शाळा
लगसे जसो फुलईनको मळा
शिककर सुशिक्षित सब होबिन
ए बी सी डी शिकबिन ......॥७॥

४२. चिच को झाड

- सौ. छाया सुरेंद्र पारधी

लटा लोंब फरेव वाकडो चिच को झाड
हिरवी हिरवी चिच पिकसे पडसे पाड ॥१॥

चिच लगी सेत जसी ठेई बंदूक लटकाय
कब पडे चिच देखसेजन डोरा मटकाय ॥२॥

देख देखकर सुट्से तोंडला सबको लार
आन ना सोनू झोडपा अना गोटा दुय चार ॥३॥

झोडबिन चिच ना बनावबिन लॉलीपाप
मिश्रावबिन तीखो, नोन, भेली को पाक ॥४॥

दिनभर खेल आमरो चिच को खाल्या
आवसेत संगि मोरा पिंकी राम्या, बाल्या ॥५॥

टायर को झुला झुलकर आवसे मज्या
पड्या त टोंघरा फुटकर मिलसे सज्या ॥६॥

बचपन का दिन आमरा बड़ा मजेदार
रोज बनसेजन आमी चिच का किलेदार ॥७॥

४३. सभा प्राणींनकी

- सौ.वर्षा पटले / रहांगडाले

जंगल मा प्राणींनकी
जमी होती मोठी सभा
सभामा बोलनकी
सबला होती मुभा ॥१॥

हरीण, ससा अना बंदर
उगामुंगा बस्या होता
कोल्ह्याको डोस्का मा
बहूत बिचार ठस्या होता ॥२॥

गडबड गोंधळ पुरो
चालू होतो सभामा
शेर बाबाजी बसे होतो
शानलका गुफामा ॥३॥

शेर बाबाजी डखरेव
बडो जोरलका
डोस्का खराब भयेव
वहाको शोरलका ॥४॥

सप्पा प्राणी भया चिडीचूप
बंदर की बी बंद भयी हुपहुप
बागला देखके पाय लगायके पराया
जंगल मा भया इत ऊत गुडुप ॥५॥

४४. हुशार बिलूबाई

- सौ.वर्षा पटले / रहांगडाले

उगी मुगी उगी मुगी आई बिलू बाई
शिको परको दूध पीयके चली गयी ॥१॥

तपाय के ठेयी होतीन रांधनखोलीमा
सीग परको दूध गयेव बीलूको पोटमा ॥२॥

दूध पीयके मारीस बीलू मंग डकार
आवडाव देखके भय गयी वा फरार ॥३॥

मीसीको दूधपरा तावलका जीभ फीराईस
पोटमाको गुळगुळीला दाबदुबारीलं शांत करीस ॥४॥

माय आई मोठांगलका चाय बनावनसाती
दूधकी गंजी खाली देखके पीट लेईस छाती ॥५॥

तोंडभर गारी देयके घर लेईस डोस्कापरा
कोन्टो मा बिलू देखके चढ गयेव पारा ॥६॥

वरतपरको डंडा धरके बिलूको मंग धाई
बिलू बाई डंडा देख दूम दबायके पराई ॥७॥

४५. बाहुली को बिह्या

- सौ. शारदा चौधरी

तोरो बाहुला मोरी बाहुली
दुहीको जमंसे मस्तच मेल ॥
खेलबी आज सब मिलके
बाहुलीं को बिह्याको खेल ॥१॥

मंडप टाको डगाली को
आंबाको पानकी बांधो तोरण ॥
जल्दी बिह्याकी करो तयारी
लगावो हल्दी बांधो काकन ॥२॥

संगी सोयरा लग्या कामला
बिह्यकी सबला मोठीच घाई ॥
कोणी आणसें बिसरो कपडा
हौस ला काही कमीच नहीं ॥३॥

बाहुली मोरी गोरी पान
नवरी बनके सुंदर सजी ॥
फेटामा देखके नवरदेवला
मुसुर मुसुर हासके लाजी ॥४॥

बाशिंग बांधके आयेव वर
संग बराती लगीन माहोल ॥
मंगलाष्टक भी भया पाच
लगेव बिह्य बजेव ढोल ॥५॥

भातभाजी, फिंगर जलेबी
जेवण भयेव लज्जतदार ॥
दुही डोरा मा दाटेव पूर
जब नवरीबाई भई सार ॥६॥

बोलो पोवारी

बाचो पोवारी

लिखो पोवारी

पोवारीका पुरस्कार प्राप्त युवा साहित्यिक गुलाब बिसेन इननं पोवारी, मराठी साहित्य क्षेत्रमा आपलो साहित्य सर्जनलक अलग छाप छोडीसेन. बालसाहित्य क्षेत्रमा उनको कार्य प्रशंसनीय से. पोवारी बालसाहित्यला चालना देनसाती उननं "झुंझुरका" येव पोवारी बाल इ-मासिक सुरू करीन. येनंच झुंझुरका मासिकमा प्रकाशित पोवारी बालसाहित्यिकइनकं निवडक बालकविता इनको "फिपोली" येव ग्रंथ संपादित कर पोवारी बालसाहित्यला अलग उचाईपर लिजानको प्रयास सराहनीय से.

गुलाब बिसेन इनको येव ग्रंथ नहान टुरूपोटु इनला पसंद तं आहेच, पर उनला पोवारीकी गोडी लगावनला अना बाचन संस्कृती वृद्धिंगत करनलाबी महत्वपूर्ण साबित होये. पोवारी बालसाहित्यला समृद्ध करस्यान अलग उचाई प्राप्त करनोमा यव ग्रंथ मील को पत्थर साबित होये येव बिस्वास से. पोवारीका युवा सर्जनशिल साहित्यिकला साहित्य सर्जनसाती हार्दिक शुभकामना!

- ऋषी बिसेन (IRS)
संयुक्त आयुक्त (TDS),
आयकर विभाग, संभाग 1, नागपूर

फिपोली (पोवारी बालकविता संग्रह)
प्रकाशक:- इंजी. गोवर्धन बिसेन
फोन: +९१ ९४२२८३२९४१
मुल्य : ₹१००/-